कृष्ण-कृष्ण सब कोई कहे, भेद न जाने कोय

समस्त सुन्दरसाथ को प्रणाम जी,

आप पूर्णब्रह्म, सच्चिदानन्द, धाम के धनी, हमारे प्राणनाथ श्री राज जी महाराज, हम आत्माओं को खेल दिखाने सर्वप्रथम बृज में श्रीकृष्ण जी के रूप में आये। ११ वर्ष के ५२ दिन लीला करने के पश्चात् कालमाया के ब्रह्मांड को छोड़कर योगमाया के ब्रह्माण्ड में गये। वहां जाकर नये वृन्दावन की रचना की, तथा बांसुरी बजाकर हमें भी बुला लिया। वहां विरह एवं विलास की लीला करने के बाद हम परमधाम गये। इच्छा पूरी न होने पर दुबारा ज्यों का त्यों ब्रह्मांड बनाया, वैसे ही गोकुल, वृन्दावन बनाया। यहां ७ दिन तक गोलोकी शक्ति ने प्रतिबिम्ब लीला की, तथा ४ दिन मथुरा में भी गौलोकी शक्ति ने लीला की। इसके पश्चात् यह शक्ति भी निकल गई। केवल विष्णु की शक्ति बची। यहां से १६ कला सम्पूर्ण विष्णु भगवान की लीला शुरू हो जाती है।

आम तौर पर सुन्दरसाथ त्रिधा लीला के विषय में उपरोक्त ज्ञान मात्र रखता है। और इस धोखे में आ जाता है कि ११ वर्ष ५२ दिन वाला कृष्ण अक्षरातीत है, उसके बाद ११ दिन वाला गौलोकी कृष्ण है और उसके बाद वाला कृष्ण बैकुण्ठ का है। यहीं हमसे गलती हो जाती है कि हम तीन कृष्ण समझ बैठते हैं, परन्तु वास्तव में कृष्ण तीन नहीं हैं, लीला तीन हैं।

"नाम एक विध होत है, लीला त्रिविध होय।"

कृष्ण का नाम एक ही है क्योंकि तन एक ही था, पर उस तन में तीन अलग-अलग समय (Period) में तीन अलग-अलग शक्तियों ने लीला की। प्रथम ११ वर्ष ५२ दिन तक अक्षरातीत के आवेश में लीला की। फिर ११ दिन तक गौलोकी कृष्ण की शक्ति ने लीला की। इसके बाद दोनों ही शक्तियों से विहीन विष्णु भगवान की शक्ति ने लीला किया। और एक महत्वपूर्ण वास्तविकता तो यह है कि ११ वर्ष ५२ दिन वाली लीला जब अखण्ड हुई, तो वही गौलोकी कृष्ण कहलाया, अर्थात् ११ वर्ष ५२ दिन वाला कृष्ण ही गौलोकी कृष्ण बना।

सुन्दरसाथ जी, ऐसा कदापि नहीं है कि हम ११ वर्ष ५२ दिन वाली एवं रास वाली कृष्ण लीला को नहीं मानतें हम स्वीकारते हैं, मानते हैं कि कृष्ण के तन में ११ वर्ष ५२ दिन तक हुई लीला ब्रह्म लीला है। पर वो कृष्ण का तन तो परमधाम से नहीं आया। परमधाम से तो अक्षरातीत श्री राजजी का आवेश आया, और मूल स्वरूप, तो मूल-मिलावे में सिंहासन पर विराजमान है, उनका असल स्वरूप तो कुछ और ही है। तो असल स्वरूप को चित्त में धारण करना चाहिए, असल स्वरूप को पूजना उचित है ना कि उनके भेख अर्थात् खेल में धरा रूप को।

Nijanand App

मूल न लेवे माएना, लेत उपली देखा देख।
असल स्वरूप को दूर कर, पूजत उनका भेष।। कि. प्र.६४ चौ. १७

परमधाम में मूल तनों में जागृत होने के लिए परमधाम के मूल स्वरूप, असल लीला एवं २५ पक्षों का चितवन जरूरी है। क्योंकि इसी से हमारे हृदय में इश्क पैदा होगा और हम मूल-मिलावे में श्री राज जी के चरणों में जाग्रत हो सकेंगे।

ऐ ही अपनी जागनी, जो याद आवे निज सुख।
इश्क याही सो आवही, याही सो होइये सनमुख।। पि. प्र. ४ चौ० ७

परन्तु हमारे जागने में सबसे ज्यादा आड़ा यही बृज व रास लीला आ रही है, क्योंकि हम कृष्ण भक्ति, कृष्ण भजन, बृज-रास कृष्ण लीला, में ऐसे फंसे हैं इसको छोड़कर आगे जा ही नहीं पाते। आगे परमधाम का विचार करने की जरूरत ही नहीं समझते। यही बात इंद्रावती ने भी कही है कि:-

"आड़ा देओ छो ब्रज ने रास" खटरुति प्र.८ चौ

श्री प्राणनाथ जी के द्वारा इस तारतम ज्ञान के लाने के पहले दुनियां वाले कृष्ण को विष्णु का अवतार समझते थे क्योंकि कृष्ण के तन में विष्णु भगवान जीव के रूप में शुरू से ही थे। विष्णु के तन (श्रीकृष्ण) में भले पारब्रह्म ने लीला की, परन्तु दुनिया वाले विष्णु की ही लीला अर्थात् कृष्ण लीला समझ रहे थे। इस प्रकार वह ब्रह्म लीला विष्णु के अवतार कृष्ण लीला के रूप में ढँप गई। पारब्रह्म के असल स्वरूप, नाम की कोई पहचान ही नहीं कर पाया।

ब्रह्मलीला ढ़ांपी हती, अवतारों दरम्यान।
सो फेर आये अपनी, प्रगट करी पहचान।। कि. प्र. ५२ चौ. २५

अब इस २८वें कलियुग में पारब्रह्म अक्षरातीत श्री राज जी महाराज, श्री श्यामा महारानी स्वरूप श्री देवचन्द्र जी को श्याम जी के मन्दिर में दर्शन देकर तारतम ज्ञान देते हैं। "निजनाम श्री कृष्ण जी"। श्रीकृष्ण नाम का तारतम यह बताने के लिए दिया है कि "मैंने ही कृष्ण के तन में लीला किया था" क्योंकि इससे पहले दुनिया वाले कृष्ण लीला करने वाला विष्णु भगवान को समझते थे। इसलिए देवचंद्र जी को पहचान कराते हैं कि मैंने ही कृष्ण के तन में लीला किया पर आगे स्पष्ट कर दिया कि मैं "अनादि अक्षरातीत" हूं। ११ वर्ष ५२ दिन वाला कृष्ण और रास वाला किशोर कृष्ण तो योगमाया में अखंड है, परमधाम में नहीं। आज भी बृज व रासलीला अखण्ड रूप से चल रही है पर उसमें अक्षरातीत की शक्ति नहीं।

नाम तत्व कह्युं श्रीकृष्ण जी, जे रमे अखण्ड लीला रास। कि. प्र.६४ चौ. ७

और श्री देवचंद्र जी के तन से आड़ीका लीला श्रीकृष्ण के रूप में प्रगट होकर करते रहे

Nijanand App

ताकि सबको यह पहचान हो जाये कि इस तन में मैंने ही लीला की थी। यही कारण था, असल स्वरूप की पहचान न होने से उनके तन से कोई भी आतम जाग्रत ना हो सकी।

दिन चौथे मिने, रसुले धरा कदम।
तिन पावने सूझ ना किया, जागी ना कोई आतम।। *बीतक पृ. ५४ चौ. २४*

ये बात कुरान में पहले से ही लिखी थी, कि ईसा रूह अल्ला श्री श्यामा महारानी इस संसार में दो तनों में बैठ कर लीला करेंगी और पहले तन से जागनी का कार्य ना हो पायेगा। दूसरा तन (श्री मेहराज ठाकुर) में सारा कार्य होगा। और इस तन से पूर्णब्रह्म सारी दुनिया में जाहिर होंगे।

रूह अल्ला पेहेरसी जामे दोए, दुसरे ऊपर मुद्दार।
याही ईमाम मेंहदी, याकी बुजरकी बेशुमार।। *कि. पृ. १०८ चौ. ६*

दूसरे जामे श्री मेहराज ठाकुर के तन से "तारतम का तारतम" अवतरित हुआ अर्थात् परमधाम के २५ पक्ष, श्री राज श्याम जी के असल स्वरूप सिंगार का ज्ञान देने वाली चारों किताबें "खिलवत, परिक्रमा, सागर तथा सिनगार श्री इन्द्रावती के तन में बैठ कर स्वयं श्री राज जी ने जाहिर किया जो जागनी का मुख्य आधार हैं।

तारतम का जो तारतम, अंग इन्द्रावती विस्तार।
पैए देखावे पार के, तिन पार के भी पार।। *क. हि. २३/६२*

और इसी तन से दोंनों लौकिक नाम श्रीकृष्ण, श्री देवचन्द्र को मिटाकर अपने असल नाम श्री प्राणनाथ जी, श्री साहिब जी, के रूप में जाहिर हुए। आज भी दुनिया वाले उन्हें इसी नाम से जानते हैं। इसी नाम से एवं इसी पहचान के दुनिया में जाहिर होने से दुनिया वालों को अखण्ड मुक्ति मिलेगी।

सो पेहचान सबों पसराये के देसी सुख वैराट।
लौकिक नाम दोऊ मेट के, करसी नयो ठाट।। *कि. पृ. ५२ चौ. २६*

इसीलिए इंद्रावती जी कहती हैं कि-धनी ने मेरे अंदर विराजमान होकर, अपना सही नाम "श्री जी साहेब जी" कहा है और बेहद के पार के पार उस परमधाम का ज्ञान कहला रहे हैं। उनके द्वारा दिये हुए आखिरी कुरान "श्री कुलजम स्वरूप" के ज्ञान से दुनिया के सभी प्राणी निर्मल होंगे तथा अखण्ड मुक्ति प्राप्त करेंगे। ओर श्री राजजी ने सबका न्याय करने की शोभा मुझे बक्शी। (भले मेरे तन में वे ही विराजमान होकर सारा कार्य कर रहे हैं)

रोशनी पार के पार की, दई साहेब नाम धराए।
भई दुनिया साफ मुसाफ से, मुझसे कजा कराए।। *कि. ६१/२४*

Nijanand App

मोहे अपनो सब दियो, रही ना कोई सक।
सही नाम दियो मोहोर अपनी, कर रोशन थापी हक।। कि. ६१/१८

अपनी आत्माओं को जगाने के लिए धनी दो बार तारतम लाये। पहली बार श्री देवचंद्र जी के तन से। उस तारतम को केवल ब्रज-रास लीला की ही समझ हुई। ३१३ आत्मायें जाग्रत होने पर भी भूल गई। और दूसरे तन से तारतम आया, "निज नाम श्री जी साहेब जी"। इसी कारण सम्वत् १६३३ के बाद उतरे ग्रंथ संबंध से "निजनाम श्री जी साहेब जी" की छाप है।

तारतम देख विचार के, पिऊ ल्याये बेर दोए।
एती आग सिर पर जली, तुं रहया खांगडु होय।। प्र. हि. १४/८

कई सुन्दरसाथ सोचते हैं कि ब्रज रास लीला के वर्णन में कई जगह श्रीकृष्ण जी को साथ श्री राज, श्री श्याम कहा जाता है इसी कारण देवचंद्र जी को भी वाला जी, प्राणनाथ करके लिखा है। तो श्री राजजी और श्रीकृष्ण जी एक हैं, परन्तु ऐसा नहीं है। इसका भेद यह है कि राज जी की शक्ति जब तक किसी तन में रहती है वह तन हमारे लिए धनी, श्री राज, श्री प्राणनाथ कहलाता है। इसी कारण देवचंद्र जी को भी वाला जी, प्राणनाथ करके लिखा है।

नित प्रते सहु साथ ने, वाला जी दिये छे सार।
दया करीने वरणने आपण आगल-आधार।। रास १/४८

"तब श्री मुख वचन कहे प्राणनाथ, दूढ़ काढ़ना, आपनो साथ।"

इसी प्रकार श्री मेहराज ठाकुर को भी श्री राज, अक्षरातीत कहा गया है।

ऐ ही अक्षरातीत है, ऐ ही हैं धनी धाम।
ऐ ही मेंहदी मंहमद ईसा, ऐ ही पूरे मनोरथ काम।।
श्री बीतक साहिब ६८/७८

चोपड़े की हवेली मिने, तहां पधराये श्री राज।
चले आप सुखपाल ले, कांध पर कुंवर महाराज।।
श्री बीतक साहिब ६०/४६

इस प्रकार स्पष्ट है कि श्री राज जी की शक्ति वर्तमान में जिस तन में होती है, वही प्राणनाथ, धनी कहलाता है और शक्ति वापस मूल तन में गई तो मूल स्वरूप श्रीराज श्यामा जी ही हमारे धनी कहलायेंगे, ये श्रीकृष्ण, श्री देवचंद्र, श्री मेहराज के तन नहीं। यही परमधाम का गुझ भेद है। जिसने समझ लिया, वह श्रीकृष्ण, श्री देवचंद्र जी, श्री मेहराज के तनों को नहीं पूजेगा। वह श्री प्राणनाथ, श्री जी साहेब जी मूल स्वरूप को पूजेगा।

नर नारी बूढ़ा बालक, जिन ईलम लिया मेरा बूझ।
तिन साहेब कर पूजिया, अर्श का ए ही गुझ।। कि. १०६/२१

प्रणाम जी, आपका सुन्दरसाथ,

सुशांत कुमार अग्रवाल

Nijanand App